Azadi Ka Amrit Mahotsav

दक्षिण पश्चिम रेलवे

अभिव्यक्ति

जून, 2024

अंक : 51

राजभाषा विभाग

प्रधान कार्यालय

दक्षिण पश्चिम रेलवे

हुब्बल्लि

दक्षिण पश्चिम रेलवे

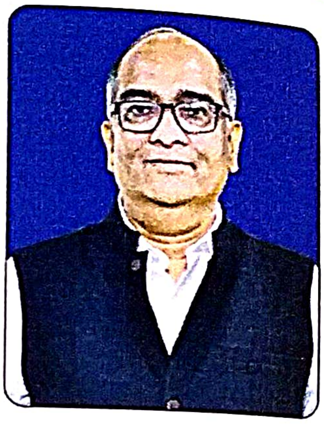

महाप्रबंधक
दक्षिण पश्चिम रेलवे

संदेश

राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, दपरे द्वारा प्रकाशित गृह-पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 51 वें अंक का प्रकाशन इस पत्रिका की यात्रा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। इस उपलब्धि के लिए राजभाषा विभाग व आप सभी को हार्दिक बधाई।

यह पत्रिका रेल कार्यालयों के विभिन्न क्षेत्रों में हो रही प्रगति के प्रस्तुतीकरण का सशक्त माध्यम है तथा रेल कर्मियों के सृजनात्मक गुणों की अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करने के साथ-साथ अन्य कर्मियों तक इस प्रगति व सृजनात्मकता को पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका भी निभा रही है।

संविधान में निहित प्रावधानों के अनुसार हिंदी का प्रचार-प्रसार तथा उसका विकास करना संघ का कर्तव्य है। भाषा के माध्यम से हम अपनी विरासत, संस्कृति और संस्कार भावी पीढ़ियों तक पहुंचाते हैं। राजभाषा हिंदी जहां सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता का प्रतीक है वहीं भारतीय संस्कृति का दर्पण भी है। यह विचारों और भावों की अभिव्यक्ति के माध्यम के रुप में पूर्णत: सक्षम है। अत: हिंदी किसी भी सक्षम भाषा से की जाने वाली अपेक्षाओं पर खरी उतरती है।

"अभिव्यक्ति" के इस नवीनतम अंक के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए मैं रचनाकारों एवं पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे विश्वास है कि गृह-पत्रिका "अभिव्यक्ति" अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सदैव सफल रहेगी।

आपका

अरविन्द

(अरविंद श्रीवास्तव)
महाप्रबंधक

हुब्बल्लि
22 जुलाई, 2024

दक्षिण पश्चिम रेलवे

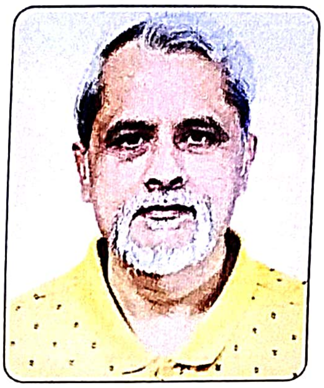

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक
दक्षिण पश्चिम रेलवे

संदेश

राजभाषा विभाग द्वारा त्रैमासिक पत्रिका का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है और इस यात्रा में गृह–पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 51वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है।

हिंदी की राजभाषा के रूप में यात्रा संवैधानिक दायित्व के रूप में प्रारंभ हुई थी, परंतु आज हिंदी संपर्क, एकता तथा संस्कृति को प्रतिबिंबित करने का सशक्त माध्यम बन चुकी है। इसके निरंतर प्रचार –प्रसार के दायित्व का हम सभी को मिल–जुल कर निर्वहन करना है।

इस दिशा में हिंदी पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। हिंदी पत्रिकाएं जहां अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सृजनात्मक वातावरण उपलब्ध कराती है वहीं भाषा और साहित्य के संवर्धन में भी सहयोग करती हैं। पत्रिकाएं रेल कर्मियों में लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न करने में भी उत्प्रेरक का कार्य करती हैं। इससे न केवल उनकी रचनात्मक प्रतिभा और कौशल में निखार आता है, बल्कि उनकी भाषा भी समृद्ध होती है।

गृह पत्रिका "अभिव्यक्ति" का सदैव यह प्रयास रहता है कि प्रत्येक अंक नए कलेवर के साथ आप सभी पाठकों की अपेक्षाओं के अनुरुप प्रस्तुत किया जाए। इसके लिए आप सभी का सहयोग मिलता रहा है तथा आगे भी अपेक्षित है। केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में हम सब सरल–सहज रूप से अपना दैनंदिन काम–काज राजभाषा हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित हों, यही इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य भी है।

पत्रिका का यह अंक मेरी सेवानिवृत्ति से पहले बतौर मुराधि मेरा अंतिम अंक है। मैं इस अंक के माध्यम से सभी साथी कर्मियों को इस पत्रिका तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में प्रदान किए गए सहयोग व मार्गदर्शन के लिए भी हृदय से धन्यवाद व आभार व्यक्त करता हूं।

मैं पूर्णत: आश्वस्त हूं कि गृह–पत्रिका "अभिव्यक्ति" अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में निरंतर सफलता के नए अध्याय लिखेगी। अभिव्यक्ति पत्रिका के अनवरत प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

अरविन्द कुमार सिरोही
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक

हुब्बल्लि
22 जुलाई, 2024

संपादक मंडल

संरक्षक
श्री अरविंद श्रीवास्तव
महाप्रबंधक

मुख्य संपादक
श्री अरविन्द कुमार सिरोही
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य सामग्री प्रबंधक

संपादक
श्री मोहम्मद नुरुद्दीन
राजभाषा अधिकारी

सह संपादक
श्री एम सावंतनवर
वरिष्ठ अनुवादक

उप संपादक
श्री रमा कांत प्रसाद
वरिष्ठ अनुवादक

सहयोगी
श्री धिरेन्द्र कुमार, कनिष्ठ अनुवादक
श्री गोपाल लाल मीना,
कनिष्ठ लिपिक सह टंकक
श्रीमती गजाला अ.करीम
कनिष्ठ लिपिक सह टंकक,
श्रीमती यल्लम्मा शिवप्पा कुशेगनवर
कार्यालय सहायक

संपादक की कलम से...

राजभाषा अधिकारी एवं सहायक सामग्री प्रबंधक (सामान्य)
प्रधान कार्यालय/दक्षिण पश्चिम रेलवे/हुब्बल्लि

यह प्रसन्नता का विषय है कि दक्षिण पश्चिम रेलवे के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित पत्रिका अभिव्यक्ति के नवीनतम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। भाषा के विकास तथा प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं की अहम भूमिका होती है। दक्षिण पश्चिम रेलवे पर "अभिव्यक्ति" पत्रिका का प्रकाशन यह दर्शाता है कि हम रेल परिचालन एवं ग्राहक संतुष्टीकरण जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के निष्पादन के साथ-साथ रचनात्मक क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहे हैं।

यह पत्रिका रेल कर्मियों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए प्रयासरत है। इसमें राजभाषा विभाग के ही नहीं बल्कि अन्य विभागों के कर्मचारियों के लेख, रचनाएँ आदि संग्रहित हैं। जिस भाषा में हम सोचते हैं उस भाषा में कार्य करना सरल और सहज होता है। केंद्रीय सरकारी कार्यालयों की राजभाषा हिंदी में हम सब सरल-सहज रूप से अपना दैनंदिन काम-काज करें। यही इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य भी है।

दक्षिण पश्चिम रेलवे की गतिविधियों से अधिकारियों और कर्मचारियों को परिचित कराने के लिए पूर्ववर्ती अंकों की तरह इस अंक में भी कुछ महत्वपूर्ण गतिविधियों की झलकियां फोटों सहित दी गई हैं। मुझे आशा है कि अभिव्यक्ति का यह अंक आपको पसंद आएगा। उसे और अधिक रुचिकर बनाने के लिए आपके महत्वपूर्ण सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी। आप सभी पाठकों एवं रचनाकारों के रचनात्मक सहयोग से "अभिव्यक्ति" अपनी यात्रा पर न सिर्फ तेज गति से आगे बढ़ेगी अपितु शनैः शनैः समृद्ध भी होती रहेगी।

पत्रिका के इस नवीनतम अंक में स्थान प्राप्त रचनाओं के रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि पत्रिका के इस विकास यात्रा में आप भरपूर सहयोग देंगे। अभिव्यक्ति पत्रिका के अनवरत प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

मो. नुरुद्दीन

मोहम्मद नुरुद्दीन
राजभाषा अधिकारी एवं सहायक सामग्री प्रबंधक (सामान्य)
प्रधान कार्यालय/दपरे/हुब्बल्लि

पत्राचार का पता

क्षेत्रीय प्रधान कार्यालय
राजाभाषा विभाग, रेल सौधा,
गदग रोड, हुब्बल्लि-580 020.
फोन नं. : 0836-23-25034/20

Zonal Headquarters Office
Rajbhasha Department Rail Soudha
Gadag Road, Hubballi - 580 020.
E-mail : srrba.swr.ubl@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार लेखकों, रचनाकारों के अपने हैं, जिसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है ।

संत कवि कनक दास

रमा कांत प्रसाद,
वरिष्ठ अनुवादक/राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय/दपरे

कनक दास का जन्म कर्नाटक के धारवाड़ जिले के बंकापुर गांव में बीर गौडा और बचम्मा के गड़रिया परिवार में हुआ था। यह दम्पति सभी तरह से सुख सुविधा संपन्न था लेकिन काफी समय तक निःसंतान था। संतान प्राप्ति के लिए इन्होंने अनेक देवी देवताओं की पूजा अर्चना की, व्रत-उपवास किए, मन्नत मनौतियां मांगी, दान दक्षिणा में भी कोई कमी नहीं रखी लेकिन संतान सुख नहीं मिल सका। एक दिन जब वे अपना नित्य क्रम के बाद सो गए तो अचानक इन्हें स्वप्न में आभास हुआ जैसे कि तिरुपति के भगवान वेंकटरमण स्वामी अपने हाथ के संकेत से इन्हें अपने पास बुला रहे हैं। इन्हें लगा कि इन्हें भगवत दर्शन के लिए तिरुपति जाना चाहिए। अतः सुबह सोकर उठने के बाद दम्पति ने अपनी यात्रा की तैयारी शुरू कर दी। एक महीने की पैदल यात्रा के बाद ये दोनों तिरुपति पहुंचे। रास्ते में कई नदियां, नाले, ताल तलैया पार किये। टीलों, पहाड़ों, पर्वत मालाओं से गुज़रे और अंततः तिरुपति पहुँच गए। वहां पहुँच कर इन दोनों ने पूरे 48 दिन तक व्रत, पूजा, ध्यान आदि किये और जब ऐसा लगा कि उन्हें भगवान का प्रसाद मिल गया है तो ये वापिस अपने घर के लिए चल दिए। परिणामस्वरूप 1508 संवत्सर के कार्तिक महीने में कृष्ण पक्ष की तृतीया को गुरुवार के दिन इन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। श्री तिरुपति तिमप्पा की कृपा से बालक हुआ था अतः उसका नाम भी तिमप्पा रखा गया। उन्हें लोकप्रिय रूप से हरिदास के नाम से जाना जाता था, जिसका अर्थ है हरी, अर्थात भगवान कृष्ण के सेवक। उन्होंने कर्नाटक संगीत में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

कनकदास ने अपना जीवन संगीत और तत्वज्ञान के साथ साहित्य की रचना के लिए समर्पित कर दिया था, जिसे उन्होंने सरल कन्नड़ भाषा में समझाया था। यह माना जाता है कि उन्होंने तिरुपति में अपने जीवन का अंतिम समय बिताया था। हालांकि, वे उडुपी से निकटता से जुड़े थे क्योंकि वे व्यासराय स्वामीजी के अनुयायी थे। उनके अनुरोध पर कनकदास ने एक बार दिव्य हस्तक्षेप में भाग लेने के लिए उडुपी में श्री वादिराज तीर्थ की यात्रा की थी। मूल रूप से इस मंदिर में भगवान कृष्ण की मूर्ति का मुख पूर्व दिशा की ओर था। कनकदास को निम्न जाति के होने के कारण, मंदिर के आचार्य और ब्राह्मण पुजारियों ने मंदिर में प्रवेश देने से मना कर दिया था। इस घटना से उन्हें बहुत दुःख हुआ था और वह मंदिर के पीछे चले गए और भगवान कृष्ण को उनके लिए दरवाजा खोलने की विनती करने हेतु भजन गीत गाए। चमत्कारिक रूप से भगवान कृष्ण की मंदिर की मूर्ति घूमकर पश्चिम दिशा की ओर मुड़ गई। मंदिर के पीछे की दीवार चमत्कारिक ढंग से गिर गई जिस कारण कनकदास को भगवान कृष्ण की मूर्ति के दर्शन हो गए। बाद में कनकदास को श्रद्धाजलि देने हेतु इस मंदिर में एक छोटे मंदिर का निर्माण कराया गया और उसे कनकन किंडी या कनकन मंदिर नाम दिया गया। कनक दास उडुपी के भगवान श्री कृष्ण के अनन्य भक्त थे।

तिमप्पा ने अपनी दीक्षा प्रतिभा के बल पर पांच छह वर्षों में ही दस पन्द्रह वर्षों का ज्ञान अर्जित कर लिया। आठ वर्ष की आयु में ही तिमप्पा संस्कृत और कन्नड़ भाषा की व्याकरण में पारंगत हो गए। इनकी अद्भुत ग्रहण क्षमता, तर्क-वितर्क कुशलता और धर्म विवेचना की प्रतिभा से गुरु श्री निवासाचार्य जी अभिभूत थे। इसके बाद भी तिमप्पा अपने व्यवहार में अत्यंत विनम्र और विनीत थे।

कनक दास ने इस प्रकार के 160 पद लिखे जो उनकी पुस्तक हरी भक्ति सागर में संकलित हैं। इनके गुरु इन्हें तिमप्पा की बजाय तिम्मरस कहते थे। इनके हृदय में गुरुजनों और देवताओं के प्रति असीम श्रद्धा थी। वे प्रतिदिन केशव के मंदिर में जाकर उनकी मूर्ति को टकटकी लगा कर देखते रहते थे। उनके मन में विचार उठते, मैं कहाँ से आया हूँ? आगे मुझे कहाँ जाना है? यहाँ कब तक रहना है? इन्हें सभी व्यक्तियों में भगवद् दर्शन होते थे।

एक दिन की बात है। तिम्मरस भगवन ध्यान में लीन थे। उन्हें लगा कि पवन पुत्र हनुमान जी की मूर्ति उनके सामने विराजमान है। उनके मन में हनुमान जी और उनसे जुड़ी भगवान राम संबंधी सभी घटनाएं एक चित्र श्रृंखला की तरह दिखाई देने लगी। देखते ही देखते उन्हें ऐसा लगने लगा जैसे सभी घटनाएं उनके सामने घटित हो रही हों। थोड़ी देर बाद सामान्य स्थिति आने पर उन्हें लगा शायद हनुमान जी कुछ कह रहे हैं। उन्होंने हनुमान जी की एक कांस्य प्रतिमा बनवाकर आदि केशव

के मंदिर में प्रतिष्ठित करा दी। अब वे प्रतिदिन केशव की पूजा अर्चना के बाद हनुमान जी की पूजा अर्चना भी करने लगे। उनकी एक ही इच्छा थी कि उनमें भी हनुमान जी जैसा दास्य भाव, ब्रह्मचर्य पालन और भगवत भक्ति का भाव आ जाये।

बारह वर्ष की अवस्था तक तिमप्पा ने विद्या, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, और योग का अध्ययन कर लिया था। इनके माता-पिता को भी यह विश्वास हो गया था की यह बालक अवश्य ही कोई देव पुरुष है। तिमप्पा को इससे दुःख हुआ लेकिन अपनी माता के दुःख को देख कर वे स्वयं संयत हो गए। एक दिन इन्होंने देखा कि इनकी माता असह्य दुःख और वेदना से तड़प कर रो रही है। वह अपने एवं अपने बालक के भविष्य के प्रति अत्यधिक चिंतित थी। तब तिम्मरस ने उन्हें समझाया, माँ, इस संसार में सुख या दुःख कुछ भी स्थाई नहीं है। ये सब आते और जाते रहते हैं। इसलिए यह उचित नहीं कि हम सुख आने पर पुलकित हो जाएं और दुःख आने पर विचलित हो जाएं। याद करो कि हममें से पहले कितने लोगों ने क्या क्या कष्ट सहे हैं। इस संसार में कोई किसी का नहीं होता। अंत में भगवान ही हमारा उद्धार करने वाला है। हमें उसकी दया पा कर ही सुखी होना है। माता को लगा कि यह उसका बेटा नहीं कोई सिद्ध पुरुष बोल रहा है।

धीरे धीरे तिम्मरस की भक्ति भावना की प्रसिद्धि आस-पास के गांव में फैलने लगी। सभी लोग इनके प्रवचन सुनने के लिए लालायित रहते। सबको ऐसा लगता कि तिम्मरस मानव के रूप में कोई अवतार हैं। वे एक महान भक्त, विद्वान, गायक, और संत कवि के रूप में विख्यात हो गए। इसके साथ वे अपना खेती बाड़ी और भेड़ बकरी चराने का काम भी करते रहे।

एक दिन की बात है कि तिम्मरस कुदाली से जमीन खोद रहे थे। खोदते-खोदते इन्हें जमीन में कुछ घड़े मिले जो सोने के सिक्के से भरे हुए थे। इन्होंने कुछ धन तो गरीबों में बाँट दिया और शेष धन मंदिरों के पुनर्निर्माण, धार्मिक आयोजन, और भोज आदि पर खर्च कर दिया। लेकिन सोने के सिक्कों से भरे घड़े मिलने का सिलसिला बढ़ता गया। ये जहाँ भी कुदाली मारते वहीं पर सिक्कों का घड़ा निकल आता। इनके खर्च करने की प्रक्रिया भी बढ़ने लगी। गांव में इस बात की चर्चा होने लगी कि तिम्मरस को जमीन से सोने के सिक्कों के घड़े मिलते ही जा रहें है और वह उसी तरह खुले हाथों से उन सिक्कों को खर्च भी करते जा रहे हैं। जनता में उनके प्रति विशेष आदर और प्रशंसा के भाव उठने लगे। लोगों ने इन्हें तिमप्पा की बजाय कनकप्पा कहना शुरू कर दिया और धीरे-धीरे ये कनक दास के नाम से प्रसिद्ध हो गए। कनक दास के त्याग, ईश्वर भक्ति, काव्य रचना, दैन्य बंधुत्व, और समदृष्टि आदि गुणों की चर्चा दूर तक फैलने लगी। यह कीर्ति विजय नगर के प्रसिद्ध भक्त राजा कृष्णदेव राय तक पहुंची। राजा राय कृष्ण देव सदा ही ऐसे व्यक्तियों को सम्मानित करने का अवसर ढूंढते रहते थे। एक दिन कनक दास को कृष्णदेव राय का राज पत्र मिला। इसमें लिखा था कि राजा कृष्णदेव राय आगामी विजय दशमी के दिन उन्हें राज दरबार में सम्मानित करना चाहते हैं। विजय दशमी विजय नगर राज्य का एक महत्वपूर्ण पर्व होता था। यह दस दिन तक चलता था और इसमें देश भर के विद्वान, पंडित, संत, सम्राट, भक्त भाग लेते थे। महाराजा ने यथासमय कनक दास को लाने के लिए अपना हाथी भेजा। कनक दास अत्यधिक अभिभूत हुए और हाथी पर बैठ कर राजा से मिलने चल दिए। रास्ते में देश के बहुत से कलाकार, नर्तक, नर्तकियां, खिलाड़ी, धनुर्धारी, स्त्री-पुरुष, धर्म, कला, कथा, साहित्य के साधक राजधानी जाते हुए मिले। इनके लिए यह यात्रा ही एक अनूठा अनुभव था।

विजय नगर में विजय दशमी का पर्व भाद्रपद कृष्ण पक्ष अमावस्या के दिन से प्रारम्भ होकर आश्विन शुक्ल पक्ष (विजय दशमी के दिन तक) बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया जाता था। यह राज्य के शौर्य और वैभव का प्रतीक था। इसमें राज्य के विकास, शौर्य, धर्म, संस्कृति, तथा ऐश्वर्य संबंधी झांकियां निकलती थी। हाथियों और घोड़ों को विशेष रूप से सुसज्जित कर पंक्तिबद्ध किया जाता था। यह एक गौरव की बात थी कि ऐसे अवसर पर महाराजा ने कनक दास को निमंत्रित किया था। ऐसे में कनक दास ने अपनी विशेष कृति "मोहन तरंगिणी" की रचना की और उसे दरबार में प्रस्तुत किया। कनक दास ने केशव, नारायण, माधव, गोविन्द, विष्णु, मधुसूदन, त्रिविक्रम, वामन, श्रीधर, हर्षिकेश, पद्मनाभ, दामोदर, संकर्षण, वासुदेव, आदि अभिधानों के आधार पर पच्चीस पदों की रचना की।

हरि निम्न पदकमल, करुणादिंदलि एनगे।।

हे हरि तुम्हारे चरण कमल के समान हैं। इनकी दया से ही मुझे तेरी सेवा करने का अवसर मिला है। समस्त गुरु मन्त्रों का तू ही मूल है। तू ही सद्गुरु की साक्षात मूर्ति है। तूने मुझे अपने पास बुला लिया है। हे भगवान तुम्हारी जय हो।

परिवार - सामंजस्य और मतभेद

प्रभाष निराला
कनिष्ठ लिपिक/परिचालन विभाग
प्रधान कार्यालय/दपरे

अफवाहों की बस्ती में, एक चिंगारी ही काफी है,
लंका जलाने के लिए ,एक पूँछ ही काफी है।
रिस्तों में लगाव न हो तो,
उसे तोड़ने के लिए एक भीषण ही काफी है।।

गड़े मुर्दे उखाड़ते है अक्सर लोग,
जिससे रिस्तों के बीच होते है इतने रोग ।
रिस्तों की खटास होती है ऐसे,
चेहरे पे आया हो जलने का निशान जैसे।

रिश्ते चलाने में बहुत करनी होती है मशक्कत,
कभी इधर से तो कभी उधर से आती है आफत।
कुछ झूठ का सहारा भी लिया जाता है,
पर परिवार को संगठित ही रखा जाता है।

कुछ चीजें परदे में रहे तो है अच्छा,
सब कुछ सार्वजनिक होना नहीं है अच्छा।
शहद जैसी मिठास न हो तो चलेगा,
पर नीम जैसी कड़वी तो बिलकुल नहीं चलेगा।

अपने जुबान को थोड़ा सा मधुर कर ले तो,
परिवार के बीच मधुरता बनी रहती है।
मुसीबत में तो यही परिवार ही काम आती है,
अच्छे-बुरे वक़्त में वे ही तो साथ खड़े रहते है।

साथ सबका हो तो मुसीबतें हल्की हो जाती है,
तूफ़ान को भी पार कर पाने की हिम्मत आ जाती है।
परिवार के साथ रहने से चेहरे की चमक दोगुनी हो जाती,
हंसी में और अधिक खिलखिलाहट आ जाती है।
घंटो बैठ बातें करने का मौका मिल जाता है,
साथ में खाने का एक अलग आनंद आता है,
त्योहारों का आनंद दोगुना हो जाता है।

जिंदगी जीने में तो तभी आनंद आएगी,
अन्यथा जिंदगी काटना है, कट ही जाएगी।
साथ बैठे तो बड़े-बड़े मसले सुलझाए जा सकते है,
जीवन जीने के नए तरीके अपनाए जा सकते है।

भारतीय रेल

सुजित कुमार
मुख्य कार्यालय अधीक्षक
सतर्कता विभाग/प्रधान कार्यालय/दपरे

आपस में भाईचारा निभाता,
लोगों को लोगों से मिलाता ।
चेहरे पर है खुशियाँ लाता,
जी हाँ, भारतीय रेल कहलाता ।

धर्म की बेड़ियां तोड़ता,
जाति-पाति को मिटाता।
लोगों को मंजिल तक पहुँचात,
जी हाँ, भारतीय रेल कहलाता ।

अमीरी-गरीबी का भेद-भाव मिटाता,
सभी को एक साथ ले जाता ।
लोगों के साथ समानता अपनाता,
जी हाँ, भारतीय रेल कहलाता।

भारत के विकास में सहयोग निभाता,
धन की कमी को है मिटाता ।
भारतीय राजस्व को बढ़ाता,
जी हाँ, भारतीय रेल कहलाता।

शहीद चंद्रशेखर आजाद के अनमोल विचार

- दुश्मन की गोलियों का, हम सामना करेंगे, आजाद ही रहे हैं, आजाद ही रहेंगे।
- दूसरों को खुद से आगे बढ़ते हुए मत देखो। प्रतिदिन अपने खुद के कीर्तिमान तोड़ो, क्योंकि सफलता आपकी अपने आप से एक लड़ाई है।
- यदि कोई युवा मातृभूमि की सेवा नहीं करता है, तो उसका जीवन व्यर्थ है।
- मैं ऐसे धर्म को मानता हूं, जो स्वतंत्रता समानता और भाईचारा सिखाता है।
- मेरा यह छोटा सा संघर्ष ही कल के लिए महान बन जाएगा।

दालान

श्याम सुंदर सिंह
आशुलिपिक/जनसंपर्क विभाग
प्रधान कार्यालय/दपरे

अभी बंटी को शादी किए हुए छह महीने ही बीते थे कि घर में कलेश होना शुरू हो गया। पत्नी रोज-रोज के झगड़े से तंग आकर मायके चली गई, तंग क्यों न हो एक सामान भी छू ली तो बड़ी भाभी बोलती है तुम छू नहीं सकती सब मेरा है, मेरे पति ने यह घर बनाया है तुम्हारे पति ने कितना कमाया है जाकर पूछो अपने पति से ! मैं क्या कहता मजबूर हूँ सरकारी नौकरी के चक्कर में उम्र निकल गई, उम्र ज्यादा होते देख पिताजी ने शादी करवा दी अब गांव में एक छोटी सी किराने की दुकान चलाता हूँ। भाभी की बात तो बहुत चुभती है लेकिन जवाब भी कैसे दूँ इतना पैसा कमाता नहीं, भैया के पैसे से ही घर चल रहा है। पिताजी भी बेबस हैं बहुत बूढ़े हो गए हैं और अक्सर बीमार ही रहते हैं। मेरे रवैये से पत्नी को लगता है कि मैं उसका साथ नहीं दे रहा हूँ इसी कारण जब से वह घर गई है अब उल्टा मुझ पर केस करने की धमकी दे रही है और साथ में ससुराल वाले भी अनाप-शनाप मुझे गाली-गलौज करने लगे हैं। कोसता हूँ अपने आप को जब इतना कमाता नहीं था तो शादी ही नहीं करनी चाहिए थी लेकिन क्या करता एक उम्र के बाद तो हर किसी को सहारे की जरूरत होती है पापा ने जिद की तो मैं भी तैयार हो गया लेकिन अब लगता है बहुत बड़ी गलती कर दी मैंने।

कोई समझना ही नहीं चाहता है कि छोटी पूंजी के कारोबार में कहाँ से इतना पैसा कमा लूँ कि सारी समस्या एकदम से खत्म हो जाए, पत्नी को काफी समझाया कि थोड़ा बर्दाश्त करो सब ठीक हो जाएगा लेकिन बड़ी भाभी के रोज-रोज के ताने से और मेरे द्वारा भाभी को कुछ न कहने के कारण अब पत्नी भी मेरे विरुद्ध हो गई है। मैं तो सोचता हूँ गले में फंदा लगा कर झूल जाऊं लेकिन बुजुर्गों से सुन रखा है आत्महत्या महापाप है, आत्मा को मुक्ति नहीं मिलती, पिशाच योनि में जन्म लेना पड़ता है, सो डर से आत्महत्या नहीं कर पा रहा हूँ। अब तंग आकर एक दिन मैंने पत्नी को बोल ही दिया जाओ थाने में जाकर इतने संगीन आरोप मुझ पर लगाओ या तो थानेदार आकर मुझे गोली मार दे या जज साहब तुम्हारे आरोपों को देख कर मुझे फांसी की सजा सुना दे। क्या करूं मैंने पिताजी को कहा था मत इतना लंबा-चौड़ा घर बनाओ अभी पक्का घर बनाने में बहुत पैसे लगते हैं बांस का घर ही रहने दो लेकिन कहने लगे, लोग क्या कहेंगे आजकल तो मजदूर आदमी भी पक्का दालान बनवाता है प्रधानमंत्री मकान योजना से 1.5 लाख रुपया मिलता है और 2-3 लाख खुद का लगाकर अच्छा मकान बना लेता है।

लेकिन, पापा अब आप भी नहीं कमा पा रहे हैं कल को भैया या भाभी नहीं कहेंगे कि मेरे पैसे से बने दालान में आराम फरमा रहा है ऐसा सुनते ही पिताजी तपाक से बोल पड़े, कैसे कहेगा बेटा! ऐसा क्यों सोच रहे हो तुम्हारा बड़ा भैया-भाभी है ऐसा नहीं होगा बेटा, मैं खामोश हो गया। ये डिजाईन वो डिजाईन करते-करते 35-40 लाख कैसे खर्च हो गए पापा को पता ही नहीं चला, 5 बीघे में 3 बीघा जमीन बिक गई, पिताजी पर अलग 10 लाख का लोन हो गया, इन्हीं सब वजहों से कुछ दिनों बाद मुझे भी पढ़ाई छोड़ कर घर बैठना पड़ गया ऐसे ही समय बीतते-बीतते दो परीक्षा एक एसएससी की और एक रेलवे की जिसका प्रीलिम्स निकल चुका था मेन्स में कुछेक नंबर से छूट गया और उम्र भी अब 30 के करीब पहुँच चुका था, पढ़ाई-लिखाई का लय ही टूट गया, अब बस गाँव में एक छोटी सी किराने की दुकान कर रहा हूँ लेकिन क्या करूँ यहाँ भी किस्मत साथ नहीं दे रही जितना सामान नहीं बिकता उससे ज्यादा तो लोग उधार ले जाते हैं जो कभी चुकाने नहीं आते।

रोज-रोज के झगड़े तो आम थे लेकिन पिछले 6-7 दिनों से घर में कलह कुछ ज्यादा ही बढ़ गया था, भैया-भाभी हर रोज मुझे घर से निकल जाने की धमकी दे रहे थे। मुझसे भी अब बर्दाश्त नहीं हो रहा था, मैंने एक दिन गुस्साकर पापा से कह दिया पापा मुझे आप कहीं भी छोटी सी जमीन दे दीजिए मैं वहीं झोपड़ी बना कर रह लूँगा, अब मुझसे बर्दाश्त नहीं हो पाएगा। पापा ने कहा ऐसा नहीं है बेटा, इस घर को बनाने में मेरा भी पैसा लगा है पुश्तैनी जमीन बिकी है सारा पैसा तुम्हारे भैया ने कैसे लगाया? कोई नहीं पापा आप सारा भैया-भाभी को दे दो अगर किस्मत में होगी तो कभी बना लूँगा नहीं तो घाँस-फूँस के घर में ही रह लूँगा लेकिन अब एक पल भी इस घर में नहीं रह सकता।

पापा भी मजबूर होकर घर से थोड़ी दूर पर जितनी जमीन पर यह दालान बना था उतनी ही जमीन मेरे नाम कर दी, मैं वहीं पर छोटी सी झोपड़ी बना कर रहने लगा। गांव के लोग मजाक तो बना रहे थे लेकिन मेरे अंदर आत्मसम्मान का भाव उमड़ रहा था, अब भैया-भाभी तो यह कह नहीं कह सकते मेरी कमाई से खा रहा है, मेरे पैसे से बने दालान में रह रहा है। आत्मा जब आत्मगौरव से

भरती है तो अपने आप जीवन में एक स्फूर्ति आ जाती है, मैंने सोचा अब सिर्फ किराने की दुकान से कुछ नहीं होगा क्योंकि इसमें उधारी बहुत लग रही थी। मैं परेशान तो बहुत था लेकिन पता नहीं क्यों मन में एक आशा भी जागृत हो रही थी कि कुछ न कुछ तो बेहतर करूँगा। सोचा क्यों न गाँव में एक कोचिंग खोल लूँ यह सोचकर मैं एक दिन अपने ससुराल इस उम्मीद से गया कि वहाँ से अगर 10-15 हजार भी मिल जायेंगे तो 3-4 डेस्क-बेंच से कोचिंग शुरू कर दूँगा लेकिन ससुराल पहुँचा तो पत्नी को किसी गाँव वाले ने बता दिया था मुझे घर से निकाल दिया गया है इस बात पर पत्नी और नाराज हो गई कि क्यों इन्होंने आसानी से घर छोड़ दिया, क्या बाबुजी का पैसा नहीं लगा था। बात बढ़ते-बढ़ते हाथापाई तक पहुँच गई ससुराल वालों ने मुझे गुस्सा कर पीटना शुरू कर दिया, मेरी बेटी का किस्मत खराब कर दिया जिस दिन से शादी किया है बस हमसे ही पैसे मांगे जा रहा है। पहले शादी में 2 लाख दहेज दिया फिर दुकान करने के लिए 1.5 लाख दिया और अब कोचिंग खोलने के लिए पैसे मांग रहा है, मेरी बेटी का पीछा क्यों नहीं छोड़ रहे? कोई पत्नी तुम्हारी यहाँ नहीं रहती है, जाओ अब फिर कभी मत आना, कुछ कर नहीं सकता बस पैसा मांगने चला आता है। ससुराल वाले मेरी किसी दलील को सुनने के लिए तैयार ही नहीं हो रहे थे उन पर इतना गुस्सा सवार हो चुका था कि मेरी पत्नी को बुला कर मेरे साले ने उसके हाथ में चप्पल थमा दी और कहा पीटो इसको। मेरी पत्नी भी उस समय गुस्से में इतनी पागल हो गई थी कि वह मुझे पीटने के लिए चप्पल पकड़ ली लेकिन जैसे ही मारने के लिए उठी मेरी आँखो पे नजर पड़ते ही रूक गई, शायद मेरी बेबसी को देख कर या मुझे पति जानकर मुझे नहीं मालूम !

मैंने किसी से कुछ नहीं कहा, यह सोच कर मन को दिलासा दिया कि कोई भी गलत नहीं है सब अपनी जगह ठीक हैं, गलती सिर्फ मुझमें है जो अब तक कुछ कर नहीं पा रहा हूँ। शहर में एक दोस्त को फोन किया कि कहीं कुछ पढ़ाने का काम मिल जायेगा उसने बताया हाँ है ना, मैंने प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिए एक नया कोचिंग संस्थान खोला है मुझे शिक्षक की जरूरत भी है और ऐसे भी तू मेरा दोस्त है बस मेहनत कर आधा तेरा आधा मेरा। झट से उसके प्रस्ताव को मैंने स्वीकार कर लिया और इस तरह हम दोनों दोस्तों ने मिल कर संस्थान को आगे बढ़ाने के लिए काफी मेहनत किया नतीजतन अगले ही वर्ष हमारे संस्थान से 20 बच्चों का रेलवे, बैंक, एसएससी समेत विभिन्न परीक्षाओं में चयन हो गया, अब तो हमारे यहाँ बच्चे इतने आने लगे कि हमारा संस्थान बड़े संस्थानों में गिना जाने लगा 2-3 वर्षों में ही मैंने गांव और शहर दोनों जगह जमीन लेकर घर बनवा लिया यह सब होते ही भैया-भाभी और ससुराल वाले करीब आने की कोशिश करने लगे लेकिन मुझे आश्चर्य हो रहा था कि ससुराल से मेरे सास-ससुर, साले तो मुझे मनाने की कोशिश कर रहे थे लेकिन पत्नी यह सब जानते हुए भी कि अब मैं बहुत अमीर हो गया हूँ उसके बावजूद मुझसे बात करने की कोशिश नहीं कर रही थी। मेरे घरवाले सभी दोस्त कह रहे थे कि छोड़ दो उसे जिस ससुराल ने तुम्हारी इतनी बेइज्जती की क्यों उसका इंतजार कर रहे हो जाओ दूसरी शादी कर लो ऐसे भी उन्होंने तुम्हें छोड़ा है तुम कर भी लोगे तो उनकी हिम्मत नहीं है तुझे आकर कुछ कह सके। लेकिन पता नहीं मन क्यों ऐसा कह रहा था शायद उसकी कोई मजबूरी हो जिस कारण वो मुझसे बात नहीं कर रही है।

खैर एक दिन रविवार को मैं मोटरसाईकिल निकाला और अपनी पत्नी के घर चला गया मुझे देखकर मेरे ससुराल वाले काफी खुश हो गए उन्होंने झटपट मेरे लिए पैर धोने चाय-नाश्ते की व्यवस्था की, करीब दो घंटे हो गए उसके बावजूद भी पत्नी मुझसे मिलने नहीं आई तो मैं और ज्यादा अचंभित हुआ। मैं शांत होकर बैठा था ऊपर वाले कमरे से जोर-जोर से आवाज आ रही थी मैंने ध्यान से सुना तो मेरे सास-ससुर मेरी पत्नी को समझा रहे थे लेकिन शायद वह सुन नहीं रही थी। इस तरह और 15-20 मिनट बीत गए मुझसे रहा नहीं गया मैं सीधा ऊपर वाले कमरे में पहुँच गया, देखा मेरी पत्नी चुप-चाप बैठी है और सभी उसको समझा रहे हैं, मुझे देखते ही मेरे सास-ससुर और साले साहब बाहर हो गए। कमरे में 1-2 मिनट के लिए पूरा सन्नाटा पसर गया मैंने पत्नी से कहा क्या तुम अब भी नाराज हो अब तो मेरे पास दो-दो घर है अगर तुम गाँव में रहना चाहती हो तो वहाँ रह सकती हो या शहर में रहना चाहती हो तो वहाँ भी रह सकती हो। यह सुनते ही मेरी पत्नी मेरे पैरों पर गिर कर जोर-जोर से रोने लगी बोली मुझे माफ कर दीजिए मैंने आपके साथ बहुत गलत किया है मैंने आपके साथ इतना बुरा बर्ताव किया है कि मुझमें अब इतनी हिम्मत नहीं है कि आपसे माफी भी मांग सकूं, मुझे आपको ऐसे कठिन हालात में अकेले नहीं छोड़ना चाहिए था। मैंने अपनी पत्नी को गले लगा लिया और कहा छोड़ो इन बातों को, जो भी होता है भले के लिए होता है, शायद ये सब न होता तो मैं आज भी गांव में किराने की दुकान चला रहा होता, मेरे दिल में किसी के प्रति बैर नहीं है। मैं तो सबका शुक्रगुजार हूँ कि जिन्होंने मुझे मेरे पुरुषार्थ से परिचय कराया और कहते हैं न "अंत भला तो सब भला"।

श्री अरविंद श्रीवास्तव/महाप्रबंधक/दपरे व अन्य अधिकारीगण द्वारा डॉ. भीम राव अंबेडकर जयंती के आयोजन समारोह की झलकियां

के एस आर रेलवे स्टेशन/बेंगलूरु में महाप्रबंधक महोदय का निरीक्षण दौरा

दिनांक 12.06.2024 श्री एम. वेंकटेशन, माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री का प्रधान कार्यालय/दक्षिण पश्चिम रेलवे में निरीक्षण दौरा तथा रेलवे के श्रम संगठनों के साथ बैठक

कार्मिक विभाग/दक्षिण पश्चिम रेलवे द्वारा सेवानिवृत्ति निपटान कार्यक्रम की झलकियां

विशेष प्रयास

श्री धिरेन्द्र कुमार/कनिष्ठ अनुवादक/प्र.का./दपरे द्वारा क्षेराभाकास की 77वीं बैठक में राहुल सांकृत्यायन के संक्षिप्त जीवन परिचय का प्रस्तुतीकरण

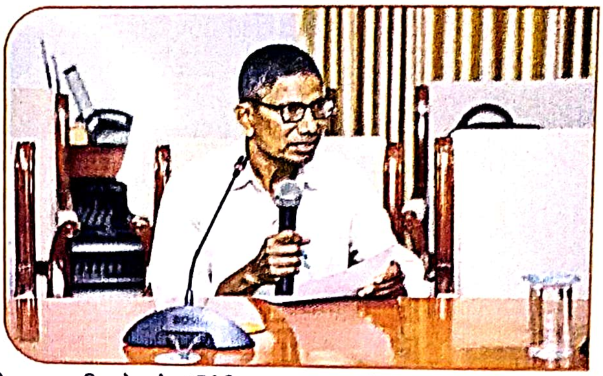

श्री बाहुबली भोसगे/हिंदी प्राध्यापक(सेवानिवृत्त)/गृह मंत्रालय द्वारा क्षेराभाकास की 77वीं बैठक में कविता "अरी वरुणा की शांत कछार" का पाठन

सामग्री प्रबंधन विभाग/दक्षिण पश्चिम रेलवे द्वारा आयोजित योग शिविर की एक झलक

श्रम दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 14.05.2024 को महिला कल्याण संगठन द्वारा रेलवे ऑफिसर्स क्लब में श्रम दिवस समारोह का आयोजन

दिनांक 23.04.2024 को दक्षिण पश्चिम रेलवे की क्रिकेट विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए श्री अरविंद श्रीवास्तव/महाप्रबंधक/दपरे

रेलवे बोर्ड द्वारा पुरस्कृत रेल यात्रा वृत्तांत

वंदे मातरम से वंदे भारत तक

(हजारों मीलों की यात्रा पहली कदम से शुरू होती है – लाओ त्सू)

बी. राधा रानी
जनसंपर्क अधिकारी
जनसंपर्क शाखा/प्रधान कार्यालय/दपरे

मैंने भारत भर में ट्रेनों में बहुत सी यात्राएं की हैं। उत्तर में कश्मीर–शिमला से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी तक। पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में असम तक। मैंने ट्रेन की खिड़कियों से पहाड़ों, नदियों, समुद्रों, झीलों, कृषि भूमि, धान के खेतों और विभिन्न इलाकों की सुंदरता, प्रकृति के परिदृश्य को देखा है। मैंने सुरंगों में प्रवेश करके गुजरने वाली रेल यात्रा का अनुभव किया है। मैंने खूबसूरत दूधसागर झरना देखा। मैं प्रेम, मानवता, क्रूरता, सहयोग और असहयोग की कहानियों की गवाह रही हूँ जो मेरी ट्रेन यात्रा के दौरान घटी थीं। मैं मनुष्यों के स्वभाव से आश्चर्यचकित थी कि कभी–कभी वे बहुत समझदार और समायोजन करने वाले होते हैं तो कभी–कभी वे बिलकुल तर्कहीन और गैर–सहिष्णु !!!

यात्रा के दौरान की एक घटना बार–बार मेरे मानस पटल पर घूमती रहती है। एक बार एक वृद्ध महिला गलत ट्रेन में चढ़ गई और घबरा गई। उनके पास न तो कोई फ़ोन था और न ही अपने रिश्तेदारों को सूचित करने के लिए उन्हें कोई फ़ोन नंबर याद था। ट्रेन के सभी यात्रियों ने उनकी मदद करने की कोशिश की। आख़िरकार एक युवक ने किसी तरह कोशिश की और उसके द्वारा बताए गए दुकान का नाम और उनके दामाद का संपर्क नंबर इंटरनेट की मदद से ढूंढ लिया। इस तरह बुजुर्ग महिला अपने दामाद से संपर्क कर पाई और उनकी मदद हुई। यह सहयोग का एक नायाब उदाहरण है। लेकिन सभी कहानियों का अंत सुखद नहीं होता। आए दिन ट्रेनों में सफर के दौरान लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार और चोरी की घटनाएं सामने आती रहती हैं।

रेल यात्रा में चाय, इडली, समोसा चिल्लाते विक्रेताओं के दृश्य बहुत आम हैं। कुछ भिखारियों के गाने (परदेसी परदेसी जाना नहीं..), पैसे मांगते किन्नरों के समूह....ये दृश्य ज्यादातर रेल यात्रियों को देखने को मिलते हैं। ये सभी घटनाएं सामान्य तौर पर यात्रा के दौरान घटित होती हैं। मैंने भी ये सारे दृश्य देखे हैं ।

कुछ साल पहले तक यात्रियों के बीच राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्दे, क्रिकेट, खेल, राजनीति, फिल्मों को लेकर बहसें आम बातें हुआ करती थीं। लेकिन अब स्थिति यह है कि हर किसी के पास मोबाइल फोन है और हर कोई अपने फोन और ईयर फोन में व्यस्त रहता है। यह विश्व भर में हुए आईटी क्रांति का परिणाम है।

भारत ने भाप इंजन वाली ट्रेनों से सेमी हाई स्पीड ट्रेनों तक एक लंबा सफर तय किया है और मेरे लिए जब यात्रा के अनुभव की बात आती है तो 6-7 घंटे की छोटी सी यात्रा हजारों मीलों की यात्रा पर भारी पड़ जाती है। मैं यहाँ किसी और ट्रेन यात्रा की बात नहीं कर रही बल्कि हाल ही में किए गए वंदे भारत ट्रेन की यात्रा की कर रही हूँ जिसने मेरे मन को छू लिया ।

मैं और मेरा दोस्त एक एनजीओ चलाते हैं और हम सोशल मीडिया में यात्रा व्लॉग के बारे में लिखा करते हैं। हमें हाल ही में वंदे भारत ट्रेन के उद्घाटन में यात्रा करने का निमंत्रण मिला जो धारवाड़ से बेंगलुरु तक गई। मैंने इस ट्रेन के बारे में सुना था और सोशल मीडिया पर कई वीडियो देखे हैं। लेकिन यात्रा के बाद ही मैं इस ट्रेन के आराम और भव्यता का आनंद ले सकी। यह यात्रा नियमित एवं पारंपरिक रेल यात्राओं से काफी अलग थी ।

इस ट्रेन को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंस के जरिए हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। ट्रेन प्रेस, टीवी चैनल कर्मियों और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसरों से भरी हुई थी। विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजेता रहे स्कूली बच्चों को भी इस ट्रेन में यात्रा करने का मौका मिला। इस ट्रेन में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि और गणमान्य लोग भी यात्रा कर रहे थे। कर्नाटक राज्य के राज्यपाल भी इस ट्रेन में यात्रा कर रहे थे। ये सफर नहीं बल्कि एक उत्सव के समान था। लोगों की भीड़ उमड़ी हुई थी इस चमचमाती आधुनिक ट्रेन को देखने के लिए। हालाँकि सुरक्षा बलों ने थोड़ी देर बाद सारी भीड़ को हटा दिया। केवल अधिकृत व्यक्तियों को ही यात्रा की अनुमति थी ।

पूरे स्टेशन और प्लेटफार्म को खूबसूरती से सजाया गया था। स्टेशन पर लोक गीत और लोक नृत्य जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। विद्यार्थी देशभक्ति के गीत गा रहे थे। स्कूली बच्चे पोस्टर प्रदर्शित कर रहे थे और कविताएँ सुना रहे थे। हर कोई सेल्फी

और तस्वीरें ले रहा था। बहुत सारे लोग वीडियो रिकॉर्डिंग कर रहे थे, व्लॉग्स और रील्स बना रहे थे। प्रेस और टीवी चैनल वाले भी ये सब कवर रहे थे।

ट्रेन की विशेषताएँ कुछ ऐसी हैं कि मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि ये हमारे भारत वर्ष की ट्रेन है और मैं भारत में सफर कर रही हूं। सभी का बड़ी अच्छी तरह से स्वागत किया गया। ट्रेन में प्रवेश करने के बाद मैंने पूरी ट्रेन का मुआयना किया। हमें एक ब्रोशर/बुकलेट दिया गया जिसमें ट्रेन से जुड़ी पूरी जानकारी थी।

वंदे भारत एक्सप्रेस एक स्व-चलित अर्ध-उच्च गति ट्रेन है। धारवाड़-बेंगलुरु वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन में 530 लोगों के बैठने की क्षमता के साथ 8 कोच वाली चेयर कार है। उन्नत अत्याधुनिक सस्पेंशन प्रणाली यात्रियों के लिए एक सुगम और सुरक्षित यात्रा और बेहतर सवारी आराम सुनिश्चित करती है। धारवाड़-बेंगलुरु के बीच वंदे भारत एक्सप्रेस कर्नाटक राज्य में शुरू की गई दूसरी वंदे भारत एक्सप्रेस है और "मेक इन इंडिया" की सफलता की कहानी का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। भारतीय रेल ने भारत की पहली स्वदेशी सेमी-हाई स्पीड ट्रेन, वंदे भारत एक्सप्रेस लॉन्च की है, जिसे माननीय प्रधान मंत्री ने सर्वप्रथम दिनांक 5 फरवरी 2019 को नई दिल्ली से वाराणसी मार्ग पर हरी झंडी दिखाई थी। धारवाड़-बेंगलुरु वंदे भारत एक्सप्रेस इस सेक्शन की सबसे तेज़ ट्रेन है, जो 6.5 घंटे में 489 किमी की दूरी तय करती है और अन्य मौजूदा ट्रेनों की तुलना में लगभग 2 घंटे का समय बचाती है।

यह नई धारवाड़-बेंगलुरु वंदे भारत ट्रेन शैक्षिक केंद्र और सांस्कृतिक शहर, धारवाड़, प्रमुख व्यापार और वाणिज्य केंद्र, हुब्बल्लि और तकनीकी सॉफ्टवेयर स्टार्टअप हब, बेंगलुरु के बीच कनेक्टिविटी बढ़ाएगी। इससे धारवाड़-बेंगलुरु-धारवाड़ मार्ग पर यात्रा करने वाले नियमित यात्रियों के अलावा सॉफ्टवेयर और व्यावसायिक पेशेवरों, प्रौद्योगिकीविदों, पर्यटकों और छात्रों को भी लाभ होगा। धारवाड़ शिक्षा का एक प्रसिद्ध केंद्र है। यहाँ पर आईआईटी, कर्नाटक विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, आईआईआईटी आदि शिक्षण संस्थान मौजूद हैं। यह जिला एशिया के सबसे बड़े कृषि और कपास बाजारों में से एक है।

यह ट्रेन कपड़ा व्यापार, तकनीकी और चिकित्सा शिक्षा के केंद्र दावणगेरे को भी जोड़ती है। वंदे भारत से शिक्षा को बढ़ावा मिलेगा, साथ ही युवाओं के लिए रोजगार के अवसर भी मिलेंगे। बढ़ी हुई कनेक्टिविटी पूरे उत्तर और मध्य कर्नाटक क्षेत्र में व्यापार, वाणिज्य और आर्थिक गतिविधियों को भारी प्रोत्साहन प्रदान करेगी। यह एयरलाइन जैसा आराम प्रदान करेगी और ट्रेन से यात्रा को नया रूप देगी।

वंदे भारत एक्सप्रेस के दोनों छोर पर दो ड्राइवर कैब कोच हैं जो गंतव्य पर तेजी से पहुंचने में सक्षम बनाते हैं। ड्राइवर कैब का चिकना और भविष्यवादी वायुगतिकीय आकार (नोज़ कोन) हवा के खिंचाव को कम करके ऊर्जा आवश्यकताओं को महत्वपूर्ण रूप से बचाएगा। निरंतर खिड़कियाँ ट्रेन के सौंदर्य को बढ़ाती हैं। ट्रेन में बेहतर यात्री सुविधाएं हैं जैसे ऑन-बोर्ड वाई-फाई इंफोटेनमेंट, जीपीएस-आधारित यात्री सूचना प्रणाली, आलीशान आंतरिक सजावट, टच-फ्री सुविधाओं के साथ बायो-वैक्यूम शौचालय, एलईडी लाइटिंग, हर सीट के नीचे चार्जिंग पॉइंट, व्यक्तिगत टच-आधारित रीडिंग लाइट और रोलर ब्लाइंड। इसमें बेहतर हीट वेंटिलेशन और हवा की रोगाणु रहित आपूर्ति के लिए यूवी लैंप के साथ एक एयर कंडीशनिंग प्रणाली भी है। इंटेलिजेंट एयर कंडीशनिंग प्रणाली जलवायु परिस्थितियों/ओक्युपेंसी के अनुसार कूलिंग को समायोजित करती है।

वंदे भारत एक्सप्रेस उस भारत का प्रतीक है जो अपने हर नागरिक को बेहतर सुविधाएं देना चाहता है। वंदे भारत विकासशील देश से विकसित देश की ओर बढ़ रहे भारत का प्रतीक है जो स्वदेशी साधनों एवं संसाधनों का उपयोग कर आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर है। वंदे भारत एक्सप्रेस द्वारा सुखद और बेहतर रेल यात्रा अनुभव के लिए एक नए युग की शुरुआत की जा रही है। इससे यात्रियों के बहुमूल्य समय की बचत होगी, साथ ही अत्याधुनिक तकनीक के साथ आरामदायक एवं सुखद यात्रा का अनुभव होगा।

वंदे भारत ट्रेन – एक नज़र में :

- एक कोच से दूसरे कोच में जाने के लिए विद्युत संचालित टच-फ्री स्लाइडिंग दरवाजे प्रदान किए गए हैं।
- यात्रियों के लिए सुरक्षित रूप से चढ़ने/उतरने के लिए स्वचालित प्लग डोर के साथ स्लाइडिंग फुटस्टेप प्रदान किए गए हैं।
- ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम (जीपीएस) युक्त यात्री सूचना सुविधा यात्रा के दौरान गाड़ी की आवाजाही की लाइव जानकारी देता है। इसके अलावा बड़े आकार की यात्री इंफोटेनमेंट प्रणाली सुविधा भी उपलब्ध है।
- यात्रा के दौरान रेल यात्रियों को मनोरम दृश्य का आनंद उठाने के लिए बड़े आकार की खिड़कियाँ प्रदान की गई हैं।
- बिजली गुल होने की स्थिति में बफर के रूप में कार्य करने के लिए प्रत्येक कोच में आपातकालीन प्रकाश व्यवस्था की गई है।

- प्रत्येक कोच में मिनी पैंट्री कार उपलब्ध है।
- दिव्यांगजन यात्रियों के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए वॉशरूम प्रदान किए गए हैं।
- उपयोग के लिए टच फ्री सुविधाओं के साथ आधुनिक बायो–वैक्यूम शौचालय उपलब्ध हैं।

प्रमुख तकनीकी विशेषताएं :

वंदे भारत एक्सप्रेस – अत्याधुनिक तकनीक युक्त गाड़ी ।

- वंदे भारत एक्सप्रेस स्वचालित सेमी–हाईस्पीड गाड़ी एक ट्रेन सेट के रूप में चलती है।
- ट्रेन सेट के दोनों सिरों का डिज़ाइन एरोडायनमिक है, जो एअर ड्रैग को बहुत कम कर गाड़ी को अत्याधुनिक बनाता है ।
- बोगियां 160 किमी प्रति घंटे की परिचालन गति के लिए पूरी तरह से सस्पेंडेड ट्रैक्शन मोटर से लैस हैं।
- गाड़ी "कवच" से लैस है, जो अत्यधिक विश्वसनीयता वाली स्वदेशी रूप से विकसित गाड़ी टक्कर–रोधी प्रणाली है।
- उन्नत अत्याधुनिक सस्पेंशन प्रणाली सुगम यात्रा का अनुभव प्रदान करती है।
- ग्रीन फुटप्रिंट योजनाओं को प्राथमिकता देते हुए पावर कारों को हटाकर और उन्नत रीजनरेटिव ब्रेकिंग प्रणाली का उपयोग करके लगभग 30% बिजली की बचत करती है।
- ब्रेकिंग प्रणाली इलेक्ट्रोन्यूमेटिक है, जिसके अंतर्गत डिस्क ब्रेक सीधे व्हील डिस्क पर लगे होते हैं, जिससे ब्रेक लगाने के बाद गाड़ी बहुत कम दूरी तय करती है।
- कोचों पर लगी सिगनल एक्सचेंज बत्तियां, गाड़ी के चलते समय रास्ते के स्टेशनों के साथ परेशानी मुक्त सिगनल आदान–प्रदान को सक्षम बनाती हैं।
- 650 मिली मीटर की ऊंचाई तक बाढ़ का सामना करने में सक्षम बनाने हेतु अंडर–स्लंग विद्युत उपस्करों के लिए सुपीरियर फ्लड प्रूफिंग।

वंदे भारत : अंदर का दृश्य – सुविधाएँ :

- तनाव मुक्त यात्रा के लिए आराम करने की सुविधा के साथ बैठने की उत्तम व्यवस्था है, जबकि एग्जीक्यूटिव कोच में 180^0 घूमने वाली सीटों की अतिरिक्त सुविधा।
- सभी कोच पूरी तरह से सील किए गए गैंगवे से जुड़े हुए हैं और गैंगवे की बाहरी फेयरिंग को एयर ड्रैग कम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- दिव्यांगजन हितैषी सुविधाओं में वॉशरूम और सीट हैंडलों पर ब्रेल लिपि में लिखे गए सीट नंबर शामिल हैं।
- गाड़ी में आपातकालीन अलार्म बटन और आपातकालीन टॉक–बैक यूनिट प्रदान किए गए हैं ताकि आवश्यकता पड़ने पर यात्री चालक दल से बात कर सके।
- निगरानी रखने के लिए सभी कोचों में सीसीटीवी लगाए गए हैं ताकि सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित की जा सके। बेहतर प्रभाव के लिए कोच के बाहर रियर व्यू कैमरों सहित प्लैटफॉर्म साइड कैमरे लगाए गए हैं।
- विशेष एयर कंडीशनिंग डक्ट ध्वनिहीन और समान वायु प्रवाह वितरण को सुनिश्चित करते हैं।

वंदे भारत एक्सप्रेस, एक अभिनव पहल : वंदे भारत एक्सप्रेस, भारतीय रेल द्वारा देश में रेल यात्रा के मानकों और रेल की गति बढ़ाने के लिए बनाई गई एक महत्वाकांक्षी योजना है। माननीय प्रधान मंत्री जी के "मेक इन इंडिया"आह्वान से प्रेरित होकर इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (आईसीएफ) ने इस पहल को आगे बढ़ाया । नवीनतम रेल प्रौद्योगिकी को आत्मसात करते हुए पूरी तरह से स्वदेशी यह रेलगाड़ी आधुनिक सेमी–हाई स्पीड, बेहतर एरोडाइनमिक डिजाइन, उच्चतम परिचालन गति, अत्यंत सुंदर आंतरिक साज–सज्जा और अत्याधुनिक संरक्षा सुविधाओं से युक्त है। प्रत्येक ट्रेन सेट की अनुमानित लागत लगभग 110 करोड़ रूपए है।

वंदे भारत एक्सप्रेस, एक संकल्पना युक्त पहल : वंदे भारत एक्सप्रेस आधुनिकीकरण की दिशा में अंतरराष्ट्रीय मानकों को प्राप्त करने के पथ पर एक लंबी छलांग है और भारतीय परिवहन के परिदृश्य में रूपांतरण का एक प्रमाण है। यह पर्यटकों को अत्यधिक

सुविधाजनक सेवाएँ प्रदान करने की भारतीय रेल की प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है। भारतीय रेल को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप आधुनिकीकरण की दिशा में उठाए गए परिवर्तनकारी कदम का प्रमाण है, जो भारत के परिवहन परिदृश्य में एक बड़ी छलांग है।

आज के दिन पूरे देश में 46 वंदे भारत ट्रेनों का संचालन हो रहा है। वंदे भारत ट्रेन, भारत में ही डिजाइन की हुई और भारत में ही निर्मित स्वदेशी ट्रेन है। इसकी रफ्तार के कितने ही वीडियो, लोगों के दिलो-दिमाग में, सोशल मीडिया पर भी पूरी तरह से छाए हुए हैं। अमृत भारत स्टेशन योजना की कड़ी में रेलवे स्टेशनों का उन्नयन किया जा रहा है। स्वदेशी तकनीक पर निर्मित एवं आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना पर देश के अलग अलग रूटों पर वंदे भारत ट्रेनें शुरू की गई हैं। यात्री संरक्षा को मजबूत करने के लिए "कवच प्रणाली" का विस्तार किया जा रहा है।

मैंने पूरी बुकलेट को अच्छे से पढ़ा और एक-एक पॉइंट को नोट किया और सच में ये सारा सिस्टम है या नहीं और ठीक से काम कर रहे हैं या नहीं चेक किया। हमारी गाड़ी सुबह 10:30 बजे खुल गई। मुझे जान कर बहुत आनंद हुआ कि ये सारी बातें बिल्कुल सही हैं। मेरी तफ़्तीश चल ही रही थी कि कैटरिंग वालों ने नाश्ते का इंतज़ाम कर दिया। नाश्ता बहुत ही स्वादिष्ट था। समय के अनुसार ट्रेन में नाश्ता, दोपहर का भोजन और रात के खाने की व्यवस्था थी। नाश्ता ख़त्म होते होते हुब्बल्लि स्टेशन पहुँच गई ट्रेन। पूरे रास्ते में लोग रेल पटरियों के किनारे इस ट्रेन की एक झलक देखने के लिए खड़े थे। अपने हाथ हिला रहे थे और मोबाइल से फोटो और वीडियो ले रहे थे। इस ट्रेन के प्रति लोगों का उत्साह देखते ही बनता है। हुब्बल्ली स्टेशन में भी ऐसी ही भीड़ थी और विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन था। ट्रेन का ऐसा स्वागत देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गई। ट्रेन अपने अगले स्टेशन की ओर चल पड़ी। उद्घाटन के कारण ट्रेन के स्टॉपेज अधिक थे।

मैं कुछ समय के लिए अपने विचारों में खोई हुई थी कि समय कैसे बदल गया है और हमारे बचपन के दिनों की यात्राओं की तुलना में ट्रेन यात्रा के अनुभव में क्रांतिकारी बदलाव आए हैं। जब हम छोटे थे तो हम खिड़की-वाली सीटों के लिए लड़ते-झगड़ते थे और अब स्थिति यह है कि सीटें पूरी तरह खिड़की की ओर घूम जाती हैं। खिड़कियाँ अब इतने लंबे और सुंदर हो चुके हैं। समय इतनी तेजी से बदल रहा है। हर एक चीज में साइंस और इंजीनियरिंग ने अपनी ऐसी छाप छोड़ी है कि सब कुछ साइंस फिक्शन स्टोरी जैसी लगती है। कहां वह पुराने गाने...... रेल गाड़ी छुक.. छुक.. छुक..... इस ट्रेन की गति के साथ मेल खाते हैं? ये आधुनिक भारत है और यह आधुनिक ट्रेन। मन में अत्यन्त गर्व हुआ कि मेरा देश बदल रहा है। तरक्की कर रहा है। सब कुछ डिजिटल हो गया है। टिकट बुक करना, खाना बुक करना, पेमेंट करना...मानो...एक मोबाइल फोन में सारी दुनिया सिमट चुकी है। मोबाइल नहीं ये असल में अलादीन का चिराग बन चुका है। अनायास मन से हंसी छूट गई... लेकिन सफर करने के लिए तो गाड़ी की ही जरूरत पड़ती है। मोबाइल फोन से अभी तक तो ये संभव नहीं हुआ है...... लेकिन क्या पता आगे चल कर संभव हो जाए...डोरेमोन की "एनीव्हेयर डोर" के जैसा !!!

इन्हीं विचारों में थोड़ी देर खोई रही फिर अचानक याद आया मुझे अपने सोशल मीडिया अकाउंट के लिए वीडियो भी तो बनाने हैं !!! मैंने अपना कैमरा उठाया और ट्रेन में बहुत सारा शूट किया। ट्रेन पुल पर से होकर जा रही थी। एक जगह ट्रेन नारियल के बागीचे के बीच से गुजरी.. दोनों तरफ हरे हरे खेत, बरसाती मौसम में बादलों के नज़ारे सब कैमरे में कैद कर लिया। उसके बाद मैं सबका इंटरव्यू लेने लगी। सब से ज्यादा खुश तो स्कूल के बच्चे थे। वो गाने गा रहे थे... कविताएं सुना रहे थे... तालियां बजा रहे थे इत्यादि। उन्हें बहुत मज़ा आ रहा था। अपने नये नये विचार साझा कर रहे थे।

ट्रेन में एक बहुत बुजुर्ग व्यक्ति भी थे। उनसे बात करके पता चला कि वे स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होंने अपनी एक कहानी सुनाई और कहा कि मैंने यह कभी नहीं सोचा था की एक दिन उनके "वंदे मातरम" के नारों से देश आज़ाद होगा और इस दिन इस "वंदे भारत" नामक ट्रेन में बैठेंगे और यात्रा करेंगे। उनकी बातें सुन कर अभूतपूर्व आनंद की अनुभूति हो रही थी और मन में नाना प्रकार के विचार उत्पन्न हो रहे थे कि देश को इस स्थिति में लाने के लिए न जाने कितने लोगों ने कितने प्रकार से योगदान दिया है !!! इस नई और पुरानी पीढ़ी को देख-सुन कर मन एक बार फिर आह्लादित हो उठा !!!

गाड़ी अपनी तेज गति से सरपट दौड़ रही थी। बारिश का मौसम भी था। बाहर बारिश हो रही थी मुझे बाहर के नजारे अति मनोरम दिख रहे थे। इसी बीच गाड़ी कई स्टेशनों पर रुकती-चलती जा रही थी। बारिश के बावज़ूद भी हर स्टेशनों पर लोगों की भीड़, वही मन को भावुक कर देने वाला स्वागत, लोगों में उमंग और जोश।

अब मैं चली युवा पीढ़ी से बात करने....लेकिन ये क्या.. कैटरिंग स्टाफ ने कहा.. लंच टाइम हो गया है... कृपया अपनी सीट पर लंच कलेक्ट करें। मैंने सोचा ठीक है...पहले खाना खा लेते हैं। खाना गरमा-गरम और बहुत ही स्वादिष्ट एवं संतुलित था। शाकाहारी भारतीय भोजन.. थोड़ा सा दक्षिण भारतीय शैली और स्वाद के साथ।

युवा हमारे देश की ताकत हैं। भारत युवाओं का देश है। भारतीय युवा हर क्षेत्र में सफल हैं। उन्होंने हमारे देश में खुद को साबित किया है। विदेशों में भी भारतीय युवा ने अपना झंडा गाड़ा है। उन्होंने कहा कि इस ट्रेन में उन्हें हवाई सफर जैसा महसूस हो रहा है। इस ट्रेन में हवाई जहाज जैसी सुविधाएं अपनाई गई हैं। उन्होंने कहा कि यह ट्रेन हवाई जहाज से कहीं बेहतर है क्योंकि ट्रेन में उन्हें बाहर के खूबसूरत नज़ारे देखने को मिलते हैं जबकि हवाई जहाज में उन्हें ऐसे नज़ारे नहीं दिखते। मैंने सोचा सही है....हवाई जहाज से तो सिर्फ बादल दिखते हैं। उन युवाओं में से कुछ इंजीनियरिंग के छात्र थे...जिन्होंने कुछ सुधार की गुंजाईशों के बारे में बताया। और कुछ युवा तो अपनी नौकरी के लिए चिंतित दिख रहे थे। दरअसल भारत एक युवा देश है लेकिन बेरोजगारी भी एक बड़ी समस्या है। अगर हम अपने युवाओं को रोजगार नहीं दे सकते तो युवा देश होने का क्या फायदा ? ये एक ज्वलनशील मुद्दा है। हर पीढ़ी की अपनी अपनी समस्याएं और विचार होते हैं।

इतने में ही हमारा गन्तव्य करीब आ गया। हमारी ट्रेन अब अपनी आखिरी मंज़िल की ओर प्रस्थान कर चुकी थी। इतनी जल्दी ये सफर खत्म होने को आ गया। सफ़र छोटा ही सही लेकिन अनोखा था। भारत की नई छवि के दर्शन हो रहे थे। प्रगतिशील भारत कैसे प्रगति की पथ पर अग्रसर हो रहा है.. इस बात का गवाह है ये सफर। आज के भारत में सबको गति और प्रगति से जोड़ने के लिए तेजी से काम चल रहा है। वंदे भारत ट्रेन इसका एक बहुत बड़ा उदाहरण है, प्रतीक है। वंदे भारत एक्सप्रेस ट्रेन भी एक राष्ट्र के रूप में हमारी साझा संस्कृति, हमारी आस्था को न केवल जोड़ती है, बल्कि वंदे मातरम की राष्ट्रीय भावना को देश भर में फैलाती भी है। वंदे मातरम से वंदे भारत तक..... यहीं मन में गूंज रहा था कि हमारा आखिरी और अंतिम पड़ाव बेंगलुरु आ गया। इतने सारे ख्यालों को लेकर इतने सारे यादों को संजोए हुए...ये यात्रा यहीं ख़त्म हुई। ख़तम....ना..ना... पिक्चर अभी बाकी है मेरे दोस्त...आगे "बुलेट ट्रेन" में मिलेंगे....हम हैं राही प्यार के... फिर मिलेंगे चलते-चलते........

जीवन

बाहुबली भोसगे,
हिंदी प्राध्यापक(सेवानिवृत्त)
गृह मंत्रालय

कभी करेला तो कभी नीम है जीवन,
कभी आम तो कभी अनार है जीवन,
कभी चंपा तो कभी चमेली है जीवन,
कभी कुछ तो कभी और कुछ है जीवन,
समझ पाना बड़ा मुश्किल है ऐसा बहुत कुछ है यह जीवन,
जितना समझते हैं उससे बड़ा विचित्र है जीवन,
कभी हीरा तो कभी मोती है यह जीवन ,
कभी सोना तो कभी चांदी है जीवन,
कभी बेशकीमती कोयला है यह जीवन,
कभी पहाड़ तो कभी खाई है यह जीवन,
कभी बहती रसधार है यह जीवन,
सभी उलझकर रह जाते हैं ऐसा भंवर है यह जीवन
कभी तूफ़ान तो कभी मंद बयार है यह जीवन,
कभी संभावनाओं का महासागर है यह जीवन।
कभी झाड़-झंखाड़
तो कभी सौमनस वन है यह जीवन।

न हो

कवि के बिना, कविता के बिना कोई भी दिन न हो।
मंदिर के बिना, मस्जिद के बिना कोई भी गाँव न हो।
बच्चों के बिना, बड़ों के बिना कोई भी घर न हो।
साधु के बिना, संत के बिना कोई भी गाँव न हो।

तीज के बिना, त्योहार के बिना कोई भी दिन न हो।
धर्म के बिना, कर्म के बिना कोई भी मनुष्य न हो।
नदी के बिना, नहर के बिना कोई भी गाँव न हो।
कुँए के बिना, तालाब के बिना कोई भी गाँव न हो।

सड़क के बिना, बस के बिना कोई भी गाँव न हो।
गाड़ी के बिना, मोटर के बिना कोई भी गाँव न हो।
गाय के बिना, भैंस के बिना कोई भी किसान न हो।
पेड़ के बिना, पौधे के बिना कोई भी खेत न हो।

फूल के बिना, फल के बिना कोई भी पेड़ न हो।
स्कूल के बिना, कॉलेज के बिना कोई भी गाँव न हो।
राजा के बिना, मंत्री के बिना कोई भी राज्य न हो।

दक्षिण पश्चिम रेलवे के intranet में http://10.205.22.75/MMDSWR webpage का development

राजेश चौधरी
मुख्य डिपो सामग्री अधीक्षक
सामग्री विभाग/प्रधान कार्यालय/दपरे

श्री राजेश चौधरी द्वारा डिजिटल क्षेत्र में किए गए नवोन्मेषी एवं सराहनीय कार्य

श्री राजेश चौधरी/मुख्य डिपो सामग्री अधीक्षक/सामग्री विभाग/प्रधान कार्यालय द्वारा सामग्री प्रबंधन विभाग में एक नए localhost webpage develop किया गया है। इस webpage को http://10.205.22.75/MMDSWR से access किया जा सकता है।

सामग्री प्रबंधन के कामकाज के महत्वपूर्ण पहलुओं के लिए एक in-house one-stop solution develop किया गया है जिसमें प्रमुख गतिविधियों की विभिन्न रिपोर्टें शामिल है। इससे फील्ड और प्रधान कार्यालय के अधिकारियों के साथ-साथ कर्मचारियों द्वारा समय पर कार्रवाई करने में काफी सहायता मिलती है। इससे स्टोर शील्ड रिपोर्ट में दक्षिण पश्चिम रेलवे की स्थिति में सुधार हुआ है।

हमारे समर्पित टीम सदस्य द्वारा इस अभिनव प्रयास का उद्देश्य डेटा तक access को सुव्यवस्थित करना और विभागीय गतिविधियों का व्यापक सारांश प्रदान करना है।

Data access के लिए User-Friendly Interface :

इस नए Homepage का विकस विभिन्न डेटा सारांशों के लिए एक केंद्रीय हब के रूप में कार्य करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो प्रमुख metrics and performance indicators का स्पष्ट और संक्षिप्त अवलोकन प्रदान करता है। यह सहज layout सुनिश्चित करता है कि विभाग के सदस्य शीघ्र एवं आसानी से आवश्यक जानकारी प्राप्त कर सके जिससे निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को बढ़ावा मिलता है और overall productivity में भी सुधार होता है।

Homepage की प्रमुख विशेषताएं:

Comprehensive Data Summaries: Homepage हमारे सामग्री प्रबंधन प्रक्रियाओं के महत्वपूर्ण पहलुओं को cover करने वाले विस्तृत डेटा सारांश प्रस्तुत करता है। इसमें इन्वेंटरी स्तर, क्रय गतिविधियाँ, उपयोग पैटर्न के साथ-साथ अन्य पहलू भी सम्मिलित है।

Interactive Reports and Detailed Views: उपयोगकर्ता डेटा में गहराई से जाने के लिए इंटरैक्टिव रिपोर्ट और विस्तृत दृश्य का उपयोग कर सकते हैं। MySQL queries का एकीकरण में data की पुनर्प्राप्ति के वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करता है जिससे हमेशा अद्यतित जानकारी मिलने की सुनिश्चितता रहती है।

Customizable Input Parameters : हमारे विभाग की विभिन्न आवश्यकताओं को समझते हुए Homepage customizable input parameters को allow करता है। Users रिपोर्ट को विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार अपने अनुकूल बना सकता है इतना ही नहीं Users व्यक्तिगत भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के आधार पर कार्य से संबंधित व्यक्तिगत अनुभव भी प्रदान करता है।

Hyperlinks के साथ बेहतर Navigation : रिपोर्ट में सभी गणनाओं में हाइपरलिंक जोड़े गए हैं ताकि उपयोगकर्ता अपने अनुभव को और अधिक बेहतर बना सके। यह सुविधा detailed view तक त्वरित Navigation को सक्षम बनाती है जिससे data को व्यापक रूप से समझने में सहायता मिलती है।

निष्कर्ष : नए localhost Homepage का launch सामग्री प्रबंधन विभाग की प्रगति और उत्कृष्टता के प्रति समर्पण का प्रमाण है। digital solutions को अपनाकर हम न केवल अपने वर्तमान कार्य संचालन में सुधार कर रहे हैं बल्कि एक उज्ज्वल और अत्यधिक कुशल भविष्य के लिए मंच भी तैयार कर रहे हैं।

पिता को समर्पित एक शब्द-पुष्प

निरंजन झा निर्वेद
वरिष्ठ पैसेंजर गाड़ी प्रबंधक
मंडल रेल कार्यालय/हुब्बल्लि

जब पिता साथ हो तब मुझे गम नहीं।
कुछ बिगाड़े मिरा जो तिरा दम नहीं।।

जब तलक छाँव हो उस पिता का मुझे।
कोइ आँधी हिला दे दिखा ख़म नहीं।।

बे ज़ुबां हो सदा रख रहे हैं ख़बर।
देवता से कहीं भी नज़र कम नहीं।।

बेचकर ख़ुद ख़ुशी ख़ुश रखे हैं हमें।
ना हुआ है ज़िगर से पिता सम नहीं।।

धूप में ही खपाए। जवानी सदा।
सुत रहे बा-ख़ुशी तो उसे गम नहीं।।

माँग के हैं सिनुर माँ सभी के लिए।
नींव के ईंट से वो लगे कम नहीं।।

हाथ निर्वेद के सर पड़ा हो जभी।
आँख उनकी कभी तो हुई नम नहीं।।

ग़ज़ल

आज मुझको जरा मचलने दो।
दर्द दिल को अभी बहलने दो।।1।।

है सनम को बहुत तन्हाई क्यूँ।
गुलबदन को नशा में पिघलने दो।।2।।

आसमां सी घटा कहर ढाया।
इस दहर में ख़ुशी निकलने दो।।3।।

महबूबा की लगी प्यारी प्यारी।
और भी प्यार को उबलने दो।।4।।

आदमी को यहाँ रहम प्यारा।
उस वहम में सफ़र सँभलने दो।।5।।

फूल ख़िलते वहीं नमी होती।
दिल खिलते तभी फ़िसलने दो।।6।।

गर निर्वेद ही रहमगर हो।
फिर नज़र नज़र मसलने दो।।7।।

रिश्ता

एम. सावंतनवर
वरिष्ठ अनुवादक/राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय/दपरे

गानों के हर हिस्से में इतरा रहे हो तुम -।।
कागज पर शायरी में लिखे जा चुके हो तुम -।।

औरों के ख्वाहिशों पे सुना जा रहा था मैं
लेकिन मेरे गाने में पढ़े जा रहे हो तुम -।।
कागज पर शायरी में लिखे जा चुके हो तुम -।

मैंने सुना है लौट के फिर आ रहे हो तुम
कागज पर शायरी में लिखे जा चुके हो तुम -।

मुझसे बिछड़ के तुम को सुकून मिल गया मगर -।।
आंखें बता चुकी हैं के पछता गए हो तुम -।
कागज पर शायरी में लिखे जा चुके हो तुम -।

बाहर अगर न आई तो जल जाओगे मेरे दोस्त-।।
सीने में ऐसी आग को दफना चुके हो तुम -।।
कागज पर शायरी में लिखे जा चुके हो तुम-।
गानों के हर हिस्से में इतरा रहे हो तुम -।

दफ्तर

दफ्तरी बेहतरी के लिए तेरा काम -।।
ऐसे अरविंद तुमको सलाम -।।
जंग जारी थी जब दिन में और रात में-।।
दफ्तर तुमको मिला ऐसे हालात में-।।
भीगे दामन और अश्कों की बरसात में -।
याद करते रहेंगे हर हालात में -।।
तेरी हर एक ईजाद पर फक्र है-।
खूबसूरत हर एक याद पर फक्र है-।।
अंधेरों से दीया बनके जो लड़ गया-।
दफ्तर की तेरी संतान पर फक्र है-।।
चीख-चीख कर कह देंगे तमाम-।।
ऐसे अरविंद तुमको सलाम-।।।

दिनांक 5 जून 2024 को श्री अरविंद श्रीवास्तव/महाप्रबंधक/दपरे तथा अन्य अधिकारीगण द्वारा रेल सौधा परिसर में पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में पौधारोपण

दिनांक 21जून 2024 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग करते हुए दक्षिण पश्चिम रेलवे के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण

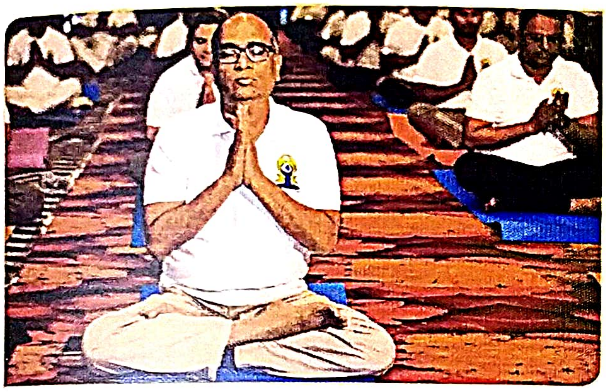

दिनांक 25.06.2024 को विद्युत विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तिका "उर्जा मित्र" का विमोचन करते हुए श्री अरविंद श्रीवास्तव/महाप्रबंधक/दपरे

दिनांक 26 जून 2024 को दक्षिण पश्चिम रेलवे के अधिकारियों द्वारा विश्व साइकिल दिवस पर आयोजित साइक्लोथान

दिनांक 18.04.2024 को आयोजित 77वीं क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की एक झलक

दिनांक 26.03.2024 को आयोजित महिला विशेष प्रतियोगिता के विजेताओं के साथ महाप्रबंधक महोदय एवं मुराधि

गृह-पत्रिका अभिव्यक्ति के 50वें अंक के विमोचन की एक झलक

दिनांक 13.06.2024 को हुब्बल्लि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तत्वावधान में आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी की झलकियां

दिनांक 13.06.2024 को हुब्बल्लि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 75वीं बैठक की झलकियां